जी डी गोइंका पब्लिक स्कूल श्रीनगर

कक्षा:छठी (6th) **विषय:हिंदी व्याकरण** **प्रसंग: क्रिया (84-89)**

1. अकर्मक क्रिया

जिन क्रियाओं का व्यापार और फल कर्ता पर हो, वे 'अकर्मक क्रिया' कहलाती हैं।

अ + कर्मक अर्थात कर्म रहित/कर्म के बिना, जिन क्रियाओं के साथ कर्म न लगा हो तथा क्रिया का फल कर्ता पर ही पड़े, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं।

अकर्मक क्रियाओं का 'कर्म' नहीं होता, क्रिया का व्यापार और फल दूसरे पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है।

उदाहरण: श्याम सोता है।

इसमें 'सोना' क्रिया अकर्मक है, 'श्याम' कर्ता है, 'सोने' की क्रिया उसी के द्वारा पूरी होती है। अतः सोने का फल भी उसी पर पड़ता है। इसलिए 'सोना' क्रिया अकर्मक है।

2. सकर्मक क्रिया

जिस क्रिया में कर्म का होना ज़रूरी होता है वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है। इन क्रियाओं का असर कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है। सकर्मक अर्थात कर्म के साथ।

उदाहरण: विकास पानी पीता है।

इसमें पीता है (क्रिया) का फल कर्ता पर ना पडके कर्म पानी पर पड़ रहा है। अतः यह सकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया के भेद :

1) एककर्मक क्रिया : जिस क्रिया में एक ही कर्म हो तो वह एककर्मक क्रिया कहलाती है। जैसे: तुषार गाडी चलाता है। इसमें चलाता(क्रिया) का गाडी(कर्म) एक ही है। अतः यह एककर्मक क्रिया के अंतर्गत आएगा।

2) द्विकर्मक क्रिया : जिस क्रिया में दो कर्म होते हैं वह द्विकर्मक क्रिया कहलाती है। पहला कर्म सजीव होता है एवं दूसरा कर्म निर्जीव होता है।

जैसे: श्याम ने राधा को रूपये दिए। ऊपर दिए गए उदाहरण में देना क्रिया के दो कर्म है राधा एवं रूपये। अतः यह द्विकर्मक क्रिया के अंतर्गत आएगा।

नीचे लिखे प्रश्नो का उत्तर अपनी व्याकरण लिखित पुस्तिका (Notebook) पर लिखे एवं पाठ को अच्छे से याद करे । प्रिंट करने की ज़रूरत नही है ।

प्र1 क्रिया की परिभाषा **उदाहरण सहित** लिखिए ?

प्र2 क्रिया के कितने भेद होते है? भेदो का नाम लिखकर प्रत्येक के एक-एक उदाहरण दीजिए

पृष्ठ 87-89 व्याकरण पाठ्य-पुस्तक(Grammar Textbook) पर कार्य करे ।